eISSN 2583-6986

IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Vol. 01, Issue 12, Dec 2022

भारतीय शास्त्रीय संगीत शिक्षण पद्धति के बदलते स्वरूपः एक विश्लेषण

[1]अलका सिंह
[1]असिस्टेंट प्रोफेसर (संगीत) दयानन्द गर्ल्स पी0जी0 कॉलेज, कानपुर, उ0प्र0, भारत

Abstract

मनुष्य एक क्रियाशील प्राणी है। वह नितदिन कुछ नया अविष्कृत करने को तत्पर रहता है। अपने प्रतिदिन के कार्यो को सम्पादित करने हेतु सर्वाधिक आवश्यक है स्वस्थ मस्तिष्क तथा सुखी मन। इन दोनों ही स्थितियों की प्राप्ति मात्र संगीत द्वारा ही की जा सकती है। संगीत भावों की अभिव्यक्ति का सर्वाधिक सरल तथा सफल साधन है। संगीत के माध्यम से हम अपने गूढ़ तथा जटिल अस्पष्ट, अव्यक्त भावों को भी सफलतापूर्वक व्यक्त कर सकते हैं। **गान्धर्व विवेचन में डॉ0 महावीर प्रसाद 'मुकेश'** ने पृष्ठ संख्या–11 पर लिखा कि **''संगीत एक आदर्शमयी शब्दहीन भाषा है, जिसके द्वारा भावों की सुन्दर अभिव्यंजन सम्भव है। इसी नैसर्गिक गुण के कारण इसे दिव्य कला माना गया है और संगीतकार को दैवज्ञ।''** संगीत के अन्तर्गत गायन, वादन तथा नृत्य तीनों कलाओं का समावेश होता है। संगीत के प्रारम्भ में दो रूप थे मार्गी संगीत तथा देशी संगीत। देशी संगीत पुनः शास्त्रीय संगीत तथा लोक संगीत में विभाजित हो गया। शास्त्रीय संगीत वह संगीत है जिसका सृजन पूर्णतः शास्त्रीय नियमों में आबद्ध हो किया जाता है। शास्त्रीय संगीत का ज्ञान गुरू के सानिध्य में रहकर विधिवत् अभ्यास से ही प्राप्त किया जा सकता है। प्राचीनकाल में शास्त्रीय संगीत का ज्ञान गुरू–शिष्य परम्परा द्वारा प्रदान किया जाता था तथा मध्य काल में इस परम्परा के स्थान पर घराना पद्धति प्रचलित हो गई। वर्तमान काल में संस्थागत शिक्षण पद्धति प्रचलित है। इस पद्धति के माध्यम से विविध विषयों के साथ नियमित चक्रावधि में छात्र को शास्त्रीय संगीत का ज्ञान प्रदान किया जाता है। वर्तमान कोरोना काल में ऑनलान माध्यम से संगीत शिक्षा प्रदान की जाने लगी है। यह ऑनलाइन शिक्षा पद्धति में संस्थागत शिक्षण पद्धति का ही स्वरूप अपनाया जाता है भेदभाव यह है कि शिक्षक तथा छात्र अपने–अपने घरों से ही अध्ययन–अध्यापन कार्य करते हैं।

संस्थागत शिक्षण पद्धति के अन्तर्गत शास्त्रीय संगीत के ज्ञान को प्राप्त करने हेतु अनेको सकारात्मक पक्ष यथा–विविध शैलियो, विधाओं का ज्ञान, मंच प्रदर्शन का अवसर, सैद्धान्ति पक्ष का ज्ञान आदि विद्यमान है परन्तु इसके साथ ही साथ इस पद्धति में शास्त्रीय संगीत शिक्षण के सन्दर्भ में कुछ सुधार भी अपेक्षित है जिससे छात्र अपनी योग्यता तथा रूचि के अनुसार, समय सीमाओं से मुक्त हो स्वतंत्रतापूर्वक शास्त्रीय संगीत का अभ्यास कर सके तथा स्वयं एक योग्य संगीत शिक्षक, संगीत कलाकार, संगीत पोषक, संगीत ज्ञाता बन सके।

मुख्य शब्द– अविष्कृत, तत्पर, अभिव्यक्ति, गूढ़, सृजन, सानिध्य

Introduction

वर्तमानकाल में प्रत्येक मनुष्य अपने जीवन स्तर को उच्च से उच्चतर तथा उच्चतम बनाने की कोशिश में लगा हुआ है। प्रत्येक मनुष्य भौतिक संसाधनों को संचित करने में व्यस्त है। ऐसी व्यस्त

eISSN 2583-6986

IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Vol. 01, Issue 12, Dec 2022

जीवन शैली में हम अपने शारीरिक सुख–सुविधाओं की पूर्ति हेतु अनेकों संसाधनों को तो एकत्र कर लेते है परन्तु आन्तरिक (आत्मिक) सुख–सुविधाओं की हम पूर्णतः उपेक्षा कर देते है। आत्मिक सुख के अभाव में शारीरिक सुख भी अर्थहीन हो जाते हैं इस आत्मिक सुख को प्राप्त करने का सर्वाध्कि सशक्त साधन है संगीत। संगीत वास्तव में वह कला है जो मनुष्य को विभिन्न रसों से सराबोर कर देती है। संगीत में गायन, वादन तथा नृत्य तीनों कलाओं का समावेश होता है। **पं0 शारंगदेव** ने अपने ग्रन्थ संगीत रत्नाकर में लिखा है कि ***''गीतं, वाद्यं च नृत्यं त्रयं संगीतम् मुच्यते।''*** अर्थात गायन, वादन तथा नृत्य तीनों कलाओं के समावेश को संगीत कहा जाता है। संगीत शब्द की उत्पत्ति संस्कृत भाषा के दो शब्दों के संयोग से हुई है– सम् तथा गीत। सम् शब्द का अर्थ है– सहित तथा गीत शब्द का अर्थ है– वह काव्यमय रचना जो गाई जा सके। अतः संगीत शब्द का अर्थ हुआ गीत सहित की गई क्रिया। पाश्चात्य देशों में संगीत को **म्यूजिक** कहा जाता है। इस शब्द की उत्पत्ति यूनानी भाषा में संगीत को **मौसीकी** कहा जाता है तथा अरबी भाषा में संगीत को **मूसीकी** कहकर सम्बोधित किया गया। विभिन्न भाषानुसार संगीत का नाम चाहे जो भी रहा हो परन्तु अर्थ सभी का समान रहा अर्थात् सभी ने गायन–वादन तथा नृत्य के समावेश को संगीत माना। संगीत की उत्पत्ति के विषय में भी विद्वानों में मत–मतान्तर रहा। कुछ विद्वानों ने संगीत की उत्पत्ति को धर्म से जोड़ते हुए माँ शारदे तथा भगवान शिव को संगीत का जनक बताया तो वहीं दूसरी ओर कुछ विद्वानों ने संगीत की उत्पत्ति को प्रकृति से जोड़ते हुए पक्षियों की चहचहाहट, झरने की जल ध्वनि, पशुओं की ध्वनियों आदि से बताया है। इसके अतिरिक्त कुछ विद्वानों जैसे **फ्रायड, जेम्स लॉग** आदि का मत है कि संगीत की उत्पत्ति मनुष्य की मनोवैज्ञानिक तथा सामाजिक आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु स्वतः ही हुई है। संगीत की उत्पत्ति के सन्दर्भ में यद्यपि विद्वानों ने मत–मतान्तर विद्यमान है तथापि इस तथ्य पर सभी विद्वान एकमत है कि अति प्राचीनकाल से ही संगीत का प्रोग किया जाता रहा है।

प्रारम्भ में संगीत के दो प्रमुख रूप प्रचलित थे– मार्गी संगीत तथा देशी संगीत। ऐसा माना जाता है कि वह संगीत जो देवताओं द्वारा प्रोग किया जाता था उसे मार्गी संगीत कहा जाता था। लौकिक व्यवहार में प्रयुक्त होने वाले संगीत, को देशी संगीत कहा जाता था। शनैः–शनैः देशी संगीत का रूप व्यापक होता चला गया तथा देशी संगीत पुनः दो धाराओं में विभाजित हो गया। शास्त्रीय संगीत तथा लोक संगीत। वह संगीत जिसका प्रयोग जनसाधारण द्वारा अपने मनोरंजन हेतु किया जाता है उसे लोक संगीत कहते है। लोक संगीत की रचना में नियमों का कोई बन्धन नहीं होता है। पं0 ओंकारनाथ ठाकुर जी ने लोक संगीत की महत्ता को वर्णित करते हुए लिखा है कि ''देशी संगीत के विकास की पृष्ठभूमि **'लोक–संगीत'** है।'' वह संगीत जो पूर्णतः शास्त्रीय नियमाधारित हो अर्थात् जिस संगीत की रचना में शास्त्रीय नियमों का पूर्णतः ध्यान रखा गया हो उसे शास्त्रीय संगीत कहा जाता है।

शास्त्रीय संगीत के ज्ञान को अर्जित करने हेतु कठोर साधना, नियमित अभ्यास की आवश्यकता होती है। प्राचीकान में शास्त्रीय संगीत की शिक्षा प्रदान करने हेतु गुरू शिष्य परम्परा अपनाई जाती थी। इस परम्परा के अन्तर्गत शिष्ट गुरू के आश्रम में रहा करते थे। प्रतिदिन वह गुरू के सानिध्य में कलाभ्यास किया करते थे। पूर्ण ज्ञान प्राप्ति के उपरान्त ही शिष्य अपने घर वापस जाते थे। लगभग आठवीं से बारहवीं शताब्दी के मध्य राजपूत काल में संगीत शिक्षा प्रदान करने हेतु घराना

eISSN 2583-6986

IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Vol. 01, Issue 12, Dec 2022

पद्धति का जन्म हुआ। इस पद्धति के अन्तर्गत गुरू अथवा उस्ताद मात्र अपने शार्गिदों तथा वंश के लोगों को ही ज्ञान प्रदान किया करते थे। इस पद्धति के द्वारा भारतीय संगीत को अनेकों घराने प्राप्त हुए। प्रत्येक घराने की अपनी एक अलग ही पहचान तथा विशेषता होती थी। यही विशेषता उस घराने के शार्गिदों द्वारा अग्रिम पीढ़ी को सिखाई जाती थी। ब्रिटिश काल में शिक्षा तथा शिक्षण–पद्धति का स्वरूप परिवर्तित हुआ। इस काल में संस्थागत शिक्षण पद्धति प्रारम्भ हुई। इस पद्धति के अन्तर्गत छात्र एक निश्चित शिक्षण संस्था (विद्यालय, महाविद्यालय, विश्वविद्यालय आदि) में जाकर कुछ घण्टे वहाँ रहता है तथा निर्धारित चक्रानुसार विविध विषयों का ज्ञानार्जन करता है पदुपरान्त अपने घर वापस आ जाता है।

वर्तमानकाल में शास्त्रीय संगीत की शिक्षा भी संस्थागत शिक्षण पद्धति के द्वारा प्रदान की जाती है। इस पद्धति के माध्यम से निर्धारित चक्रों में योग्य गुरूओं द्वारा छात्रों को शास्त्रीय संगीत का ज्ञान प्रदान किया जाता है। संस्थागत शिक्षण पद्धति का सर्वप्रमुख लाभ यह है कि इस पद्धति के अन्तर्गत छात्रों को बहुआयामी ज्ञान प्राप्त हो पाता है। छात्र विविध गुरूओं द्वारा विविध घरानों की विशेषताओं से परिचित हो पाते हैं। संस्थागत शिक्षण पद्धति परीक्षाधारित है। इसमें मूल्यांकन के माध्यम से छात्र द्वारा अर्जित ज्ञान का आकलन किया जा सकता है। इस पद्धति के अन्तर्गत शास्त्रीय संगीत की सैद्धान्तिक परीक्षा के साथ ही साथ प्रयोगात्मक परीक्षा भी होती है जिसके माध्यम से यह ज्ञात कर लिया जाता है कि छात्र ने शास्त्रीय संगीत के सैद्धान्तिक तथा प्रयोगात्मक पक्ष का कितना, क्या तथा किस रूप में ज्ञान प्राप्त किया है। इस मूल्यांकन के आधार पर ही छात्र को अग्रिम ज्ञान प्रदान किया जाता है।

संस्थागत शिक्षण पद्धति द्वारा शास्त्रीय संगीत का ज्ञान प्रदान करने से शास्त्रीय संगीत के सैद्धान्तिक पक्ष का भी ज्ञान छात्रों को समुचित रूप से प्राप्त हो पाता है। इसके द्वारा ग्रन्थाध्ययन के प्रति छात्रों में रूचि उत्पन्न होती है तथा साथ ही साथ वह स्वयं ग्रनि लेखन को अप्रत्यक्ष रूप से प्रोत्साहित होते है। इस पद्धति के अन्तर्गत संस्था में संगीत कि साथ ही साथ अन्य विषयों का ज्ञान भी प्रदान किया जाता है। इन संस्थाओं में विविध विषयों का आपसी सम्बन्ध भी वर्णित किया जाता है। संस्था में होने वाली विविध प्रतियोगिताओं के माध्यम से छात्र को अपने शास्त्रीय संगीत के ज्ञान को प्रदर्शित करने का अवसर भी प्राप्त होता है जिससे छात्रों का मनोबल तथा प्रोत्साहन मिलता है। वर्तमान कोरोना काल में संगीत शिक्षण पद्धति में एक नया अध्याय जुड़ा वह अध्याय है ऑनलाइन शिक्षण पद्धति। कोरोना संक्रमण को रोकने तथा निरन्तर संगीत शिक्षा को निरन्तर गतिवान रखने हेतु संगीत शिक्षा ऑनलाइन माध्यम से प्रदान की जाने लगी। यह ऑन लाइन शिक्षण पद्धति भी संस्थागत शिक्षण पद्धति के एक अंग के रूप में ही क्रियान्वित हुई।

शास्त्रीय संगीत के ज्ञानार्जन में संस्थागत शिक्षण पद्धति के उपर्युक्त सकारात्मक पक्षों के साथ कुछ नकारात्मक पक्ष भी उजागर हुए है। इस पद्धति में गुरू–शिष्य के मध्य पूर्व जैसा अपनत्वपूर्ण सम्बन्ध नहीं रह पाता है। यह सम्बन्ध पूर्णतः व्यवसायिक हो जाता है। इस पद्धति के विभिन्न चक्रानुसार विविध विषयों का ज्ञान प्रदान किया जाता है। शास्त्रीय संगीत एक अभ्यासाधारित कला है। इसे समय की सीमाओं में नहीं बाँधा जा सकता है। चालीस–पैतालीस मिनट के एक चक्र में

eISSN 2583-6986

IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Vol. 01, Issue 12, Dec 2022

कक्षा में उपस्थित समस्त छात्रों को किसी भी राग अथवा ताल का ज्ञान प्रदान कर पाना असम्भव है। चक्र समाप्त होने पर छात्र दूसरे विषयों का अध्ययन करने लगते हैं। तुपरान्त अगले दिन पुनः अपने चक्र में छात्र शास्त्रीय संगीत का ज्ञान प्राप्त करने आते है। उस सिथति में अभ्यास के अभाव के कारण पूर्व दिवस में कराया गया कार्य छात्रों द्वारा पूर्णतः ग्रहण किये बिना ही वह आगे सीखना शुरू कर देते है। इस प्रकार चक्रानुसार शास्त्रीय संगीत का ज्ञान प्राप्त करना तथा ज्ञान प्रदान करना दोनो ही कार्य मुश्किल हो जाते हैं।

संस्थागत शिक्षण पद्धति एक परीक्षाधारित पद्धति है। इस पद्धति में लिखित परीक्षा पर अधिक जोर दिया जाता है। जबकि संगीत एक प्रयोगात्मक कला है। अतः निष्पक्ष प्रयोगात्मक परीक्षाओं के आधार पर ही छात्र के शास्त्रीय संगीत के ज्ञान का मूल्यांकन किया जाना चाहिए। इस पद्धति में सत्र प्रारम्भ होने से पूर्व ही पाठ्यक्रम निर्धारित कर दिया जाता है जिसका अभ्यास समस्त छात्रों को पूरे सत्र में करना होता है। पाठ्यक्रम पूर्व निर्धारित करना पूर्णतः गलत है क्योंकि सभी छात्रों की योग्यताएँ एक समान नहीं होती है। पाठ्यक्रम का निर्धारण सदैव छात्र–योग्यता, छात्र–आवश्यकता आदि के आधार पर किया जाना चाहिए। ऐसा करने से ही पाठ्यक्रम छात्र–विकास में सहायक सिद्ध होगा।

अतः उपर्युक्त विश्लेषण के आधार पर कहा जा सकता है कि संस्थागत शिक्षण पद्धति यद्यपि अनेको विशेषताओं से विभूषित है तथापि यह तथ्य भी अस्वीकार नहीं किया जा सकता है कि शास्त्रीय सीत जो कि एक गुरूमुखी कला है, उकसा ज्ञान प्रदान करने हेतु अभी हमें संस्थागत शिक्षण पद्धति में कुछ परिवर्तन अवश्य ही करने होंगे। संगीत कोई सैद्धान्तिक विषय नहीं है। यह तो एक साधना है। संस्थागत शिक्षण पद्धति के माध्यम से शास्त्रीय संगीत का ज्ञान प्रदान करने हेतु हमें शास्त्रीय संगीत के सन्दर्भ में इस पद्धति के स्वरूप में भी कुछ सुधार करने होंगे यथा– चक्रावधि का विस्तारण, कला–प्रदर्शन को महत्व, पाठ्यक्रम निर्धारण में छात्र–योग्यता को दृष्टिगत रखना, दात्र–रूचि के अनुसार ज्ञान प्रदान करना आदि। उपर्युक्त वर्णित कुछ सुधारों को अपनाकर ही संस्थागत शिक्षण पद्धति के माध्यम से सफलतापूर्वक छात्रों को शास्त्रीय संगीत का ज्ञान प्रदान किया जा सकता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची–

1. आचार्य बृहस्पति तथा कुमारी, सुमित्रा (1966), संगीत चिंतामणि, हाथरस, संगीत कार्यालय।
2. अहोबल (1971), संगीत पारिजात, हाथरस, संगीत कार्यालय।
3. उप्पल, सविता (2003), संगीत शिक्षण एवं मनोविज्ञान, चण्डीगढ़, मॉडर्न बुक हाउस।
4. कुलकर्णी, वसुधा (1990), भारतीय संगीत एवं मनोविज्ञान, जोधपुर, राजस्थानी ग्रंथागार।
5. जैन, विजयलक्ष्मी (1989), संगीत दर्शन, जोधपुर, राजस्थानी ग्रंथागार।
6. पटवर्धन, सुधा (2016), संगीत शिक्षा, दिल्ली, कनिष्क पब्लिशिंग हाउस।
7. पटवर्धन, सुधा (2016), संगीत शिक्षा, दिल्ली, कनिष्क पब्लिशिंग हाउस।
8. बृजनारायण (1979), वर्तमान संदर्भ में संगीत, संगीत, हाथरस, संगीत कार्यालय।
9- बसंत (स0 लक्ष्मी नारायण गर्ग, 2004), संगीत विशारद, हाथरस, संगीत कार्यालय।

eISSN 2583-6986

IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Vol. 01, Issue 12, Dec 2022